साङ्ख्य दर्शन (Sankhya Philosophy)

– डॉ0 रत्नर्त्तुः मिश्रा

असिस्टेण्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

कपिलाय नमस्तस्मैयेनाविद्यादधौ जगति मग्ने।
कारुण्यात्सांख्यमयी नौरिविहिता प्रतरणाय।।

उन भगवान कपिल को नमस्कार है, जिन्होंने अज्ञानसागर में फँसे इस संसार के पार उतरने के लिये करुणा के वशीभूत सांख्य शास्त्र की यह नौका तैयार की।

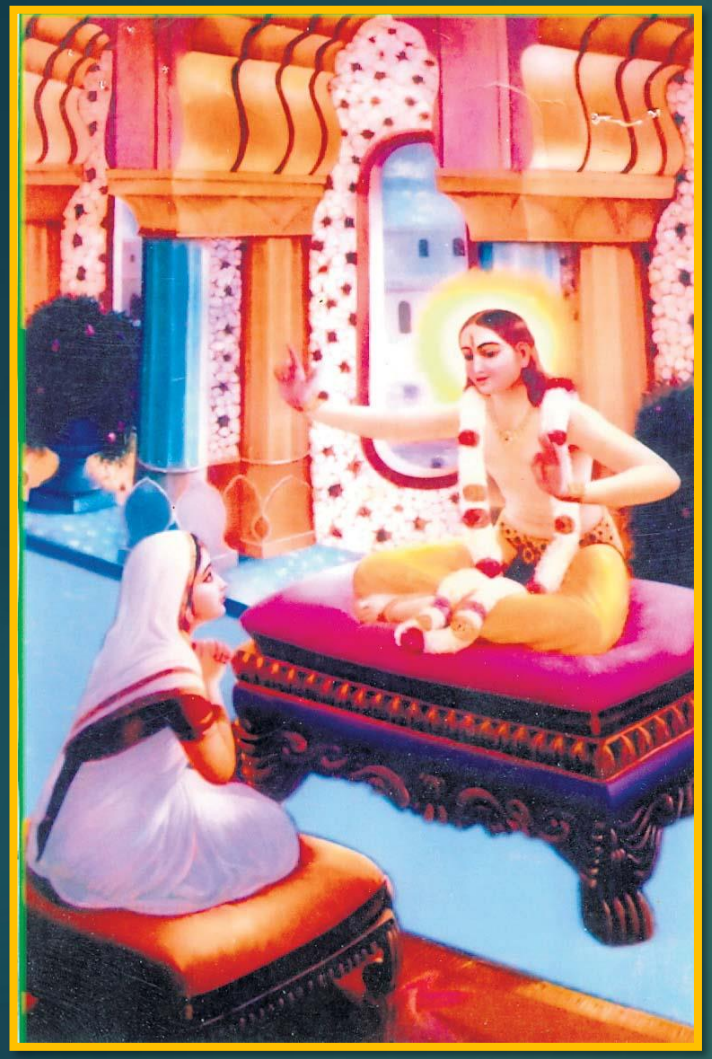

कपिल मुनि द्वारा माता देवहुति को उपदेश

माता देवहुति की जिज्ञासा –

हे प्रभु! मैं इन दुष्ट इन्द्रियों की विषय लालसा से कष्ट पा रही हूँ। इनकी इच्छा पूरी करते रहने से ही मेरा हृदय घोर अज्ञान में फँसा हुआ है। इस शरीर में जो मैं–मेरेपन का दुराग्रह होता है, जो आप ही के द्वारा उत्पन्न किया गया है। अब आप मेरे मोह को दूर करें।

दुःखत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदभिघातके हेतौ दृष्टे सापार्था चेन्नैकान्तात्यन्ततौऽभावात् ।।

दृष्ट उपाय (प्रत्यक्ष लौकिक) से ही यदि जिज्ञासा (औषधि से शारीरिक दुःख की, प्रिय वस्तु की प्राप्ति तथा अप्रिय से दूरी से मानसिक दुःख की, यज्ञादि से अन्य समस्याओं की) की शान्ति हो सकती तो तत्वज्ञान की जिज्ञासा क्यों की जाये?

अतः ऐसे हेतु को जाने जो दुःखत्रय को नष्ट करे और इसकी पुनरावृत्ति को समाप्त करे।

दुःखत्रय (Three Kinds of Pains)

दुःखत्रय		
आध्यात्मिक	आधिभौतिक	आधिदैविक

आध्यात्मिक –

शारीरिक दुःख – कफ, वात, पित्त से उत्पन्न

मानसिक दुःख – इच्छाओं का पूर्ण न होना

आधिभौतिक –

चार प्रकार के प्राणियों से उत्पन्न

1. जरायुज (जर एक झिल्ली जो गर्भ से ही देह से लिपटी रहती है)
2. अण्डज (पक्षी आदि)
3. स्वेदज (पसीने से उत्पन्न, जूँ आदि)
4. उद्भिज (वृक्ष आदि)

आधिदैविक –

दैववश उत्पन्न समस्यायें (जैसे प्रकृतिक आपदायें)

दृष्टावदानुश्रविक स ह्यविशुद्धिक्षयातिशययुक्तः।
तद्विपरीतः श्रेयान् व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्।।

लौकिक उपायों के समान ही वैदिक उपाय भी हैं। क्योंकि वह अस्वच्छता, क्षय(नाश) तथा अतिशय से युक्त है। इन लौकिक और वैदिक उपायों से विपरीत जो है वही व्यक्त (महदादि), अव्यक्त (प्रधान) तथा 'ज्ञ' (पुरुष) का विशेष ज्ञान होने से श्रेष्ठ है।

लौकिक और वैदिक उपायों दोनों से ही दुःख दूर नहीं होते। इस कारण ही तत्वज्ञान की शरण में जाना चाहिये।

25 तत्व ही "अव्यक्ताव्यक्तज्ञ" कहे गये हैं –

प्रकृति – अव्यक्त

ज्ञ – पुरुष

व्यक्त – महत्, अहंकार, 5 तन्मात्रायें (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध), 11 इन्द्रियाँ (5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियाँ, मन), 5 महाभूत(आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी)

मूलप्रकृतिविकृतिर्महरादाद्याः प्रकृतिविकृतयः सप्त।
षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः।।

मूल प्रकृति प्रधान है क्योंकि यह उत्पत्ति का कारण है। इसलिये यह अविकृति (जो किसी से उत्पन्न न हो) है। महत् आदि सात प्रकृति से उत्पन्न होते भी हैं और उत्पत्ति का कारण भी हैं। सोलह का समूह केवल उत्पन्न होता है। अतः यह केवल विकृति है। पुरुष न तो किसी का कारण है और न ही किसी को उत्पन्न करता है।

प्रकृति एवं विकृति का विवरण

प्रकृति – मूल प्रकृति, प्रधान, अव्यक्त

न प्रकृति न विकृति – पुरुष

प्रकृति–विकृति – महत्, अहंकार (मैं और मेरा का भाव), 5 तन्मात्रायें (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध)

विकृति – 11 इन्द्रियाँ (5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियाँ, मन), 5 महाभूत(आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी)

सत्कार्यवाद (Theory of Causation)

कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व कारण में विद्यमान रहता है।

सत्कार्यवाद (Theory of Causation)

- परिणामवाद
- विवर्तवाद

परिणामवाद – कारण का कार्य में रूपान्तरण (real transformation) हो जाता है

विवर्तवाद –कार्य कारण का विवर्त अर्थात् आभास (appearance) मात्र है।

प्रकृति इस संसार का मूल कारण (ultimate cause) है।

- प्रकृति त्रिगुणात्मिका है।
- यह तीन गुण सत्, रज, तम हैं।
- सत्वगुण शुक्लवर्ण **(white)**, रजोगुण रक्तवर्ण **(red)** तथा तमोगुण कृष्ण वर्ण **(black)** होता है।
- इन गुणों की साम्यावस्था **(state of equilibrium)** का नाम ही प्रकृति है।

जगत का विकास (Evolution of The World)

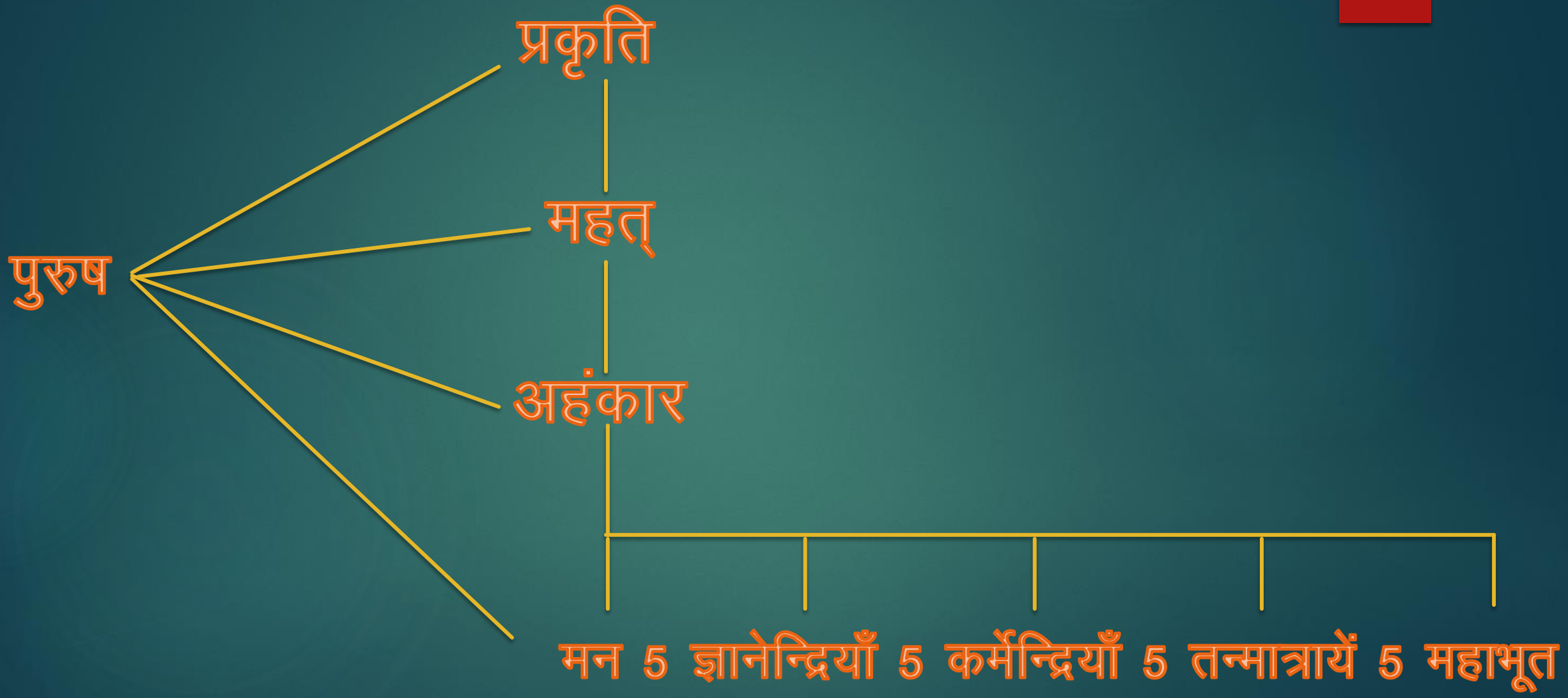

विकास के दो रूप (Stages of Evolution)

1. प्रत्ययसर्ग या बुद्धिसर्ग (Psychical)
2. तन्मात्रसर्ग या भौतिकसर्ग (Physical)

1. प्रत्ययसर्ग या बुद्धिसर्ग (Psychical) – यह प्रथम अवस्था है। इसमें महत्, अहंकार और 11 इन्द्रियों का विकास होता है।

2. तन्मात्रसर्ग या भौतिकसर्ग (Physical) – यह द्वितीय अवस्था है। इसमें 5 तन्मात्रायें, 5 महाभूत तथा उनके कार्य विकसित होते हैं।

सूक्ष्म शरीर अथवा लिङ्ग शरीर (Subtle Body)

बुद्धि, अहंकार और 11 इन्द्रियों तथा 5 तन्मात्राओं का समूह है। यही जन्म–पुनर्जन्म की यात्रा करता है।

स्थूल शरीर (Gross Body)

पंचमहाभूतों से विकसित

पुरुष या आत्मा (The Self) –

त्रिगुणमविवेकि, विषयः, सामान्यमचेतनं, प्रसवधर्मि।
व्यक्तं, तथा प्रधानं तद्विपरीस्तथा च पुमान्।।

व्यक्त और प्रधान दोनों ही त्रिगुण हैं, अविवेकी (अर्थात् इनकी पृथक्ता का विवेचन नहीं किया जा सकता) हैं, विषय (उपभोग्य), सामान्य अचेतन प्रसवधर्मि (उत्पन्न करने के स्वभाव वाला) है। किन्तु पुरुष इससे विपरीत है अर्थात् गुणरहित, विवेकी, अविषय, चेतन अप्रसवधर्मि (उत्पन्न न करने वाला) है।

अनेकात्मवाद

प्रत्येक जीव में पृथक् आत्मा (पुरुष) है।

प्रमाण–विचार (The Theory of Knowledge)

1. प्रत्यक्ष (Perception)
2. अनुमान (Inference)
3. शब्द (Scriptural Testimony)

मोक्ष (The Doctrine of Liberation)

दुःख से निवृत्ति ही मोक्ष है।

अज्ञान (Ignorance) दुःखों का कारण है।
विवेकज्ञान (Right Knowledge) मुक्ति का कारण है।

विवेकज्ञान (Right Knowledge)

प्रकृति–पुरुष भेद का ज्ञान

(Discrimination between Self and not Self)

- सुखी–दुःखी होने वाला मन है आत्मा नहीं।
- धर्म–अधर्म अहंकार ***(Ego)*** के गुण हैं आत्मा के नहीं। यह ही सत्कर्म अथवा असत् कर्म करता है और कर्म का भोग करता है।
- पुरुष इस सब से परे है।

ईश्वर विरोधी तर्क –

1. ईश्वर नित्य और निर्विकार है। वह परिणामी (changeble) नहीं है। अतः यह किसी भी वस्तु का कारण नहीं हो सकता। जगत का मूल कारण (ultimate cause of world) नित्य किन्तु परिणामी (eternal but everchanging) होना चाहिये जो प्रकृति है।
2. "ईश्वर ने जीवों के हितों के लिये यह संसार रचा है।" संसार के पाप और कष्ट इस कथन की पुष्टि नहीं करते।
3. ईश्वर में विश्वास से जीवों की अमरता और स्वतन्त्रता का खंडन होता है।

सन्दर्भ –

1. आचार्य जगन्नाथशास्त्री, (1982). *साङ्ख्यकारिका: गौडपाद भाष्य, मोतीलाल बनारसीदास,* वाराणसी.

2. **Chatterjee, S.C. & Datta, D. (1948).** ***An Introduction To Indian Philosophy*****, Calcutta University Press.**

धन्यवाद